प्रकाशन तिथि : 01 मार्च, 2020
प्रेषण तिथि : 04 मार्च, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 24 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

हाथोज में प्रशिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर के निकट हाथोज में विधायक परसराम जी मोरदिया के फार्म हाउस पर श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन से जुड़े सहयोगियों के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास के संचालन में संपन्न शिविर में माननीय संघ प्रमुख श्री एवं माननीय महावीर सिंह सरवड़ी का भी सानिध्य मिला। स्वागत, विदाई, प्रभात संदेश के साथ-साथ माननीय संघ प्रमुख श्री ने अर्थबोध का कार्यक्रम लिया एवं संघ दर्शन को समझाया। 23 फरवरी को प्रातः संघ के अनुषांगिक संगठन के रूप में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के दायित्व एवं सावधानियों के बारे में भी विस्तार से समझाया। अपराह्न बौद्धिक प्रवचन के दोनों कार्यक्रम माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने लिए जिनमें संघ का लक्ष्य, कार्य प्रणाली व हमारे इतिहास के अंतरावलोकन को विस्तार से स्पष्ट किया। इस शिविर में लगभग सभी शिविरार्थी 25 वर्ष से अधिक उम्र के थे, कुछ शिविरार्थी 50 वर्ष से अधिक उम्र के भी थे लेकिन सभी ने खेलों सहित सभी कार्यक्रमों में अपने आपको शिविर की दिनचर्या के अनुरूप ढालने का पूरा प्रयास किया। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

'जीवन बिताने को नहीं, कुछ करने को मिला है'

21 फरवरी को प्रातः शिविर के स्वागत कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हम यहां जीवन बिताने के लिए नहीं कुछ करने के लिए आए हैं। जीवन बीत तो यों ही रहा है, जैसे सबका बीत रहा है। हमारा भी बीत ही रहा था जब तक कि किसी के दर्द की एक चिंगारी ने हमें जगाकर हमारे दिलों में दर्द पैदा नहीं किया कि हम जीवन यूं ही बिताकर न जाएं, जो करने के लिए आये हैं वह करें। परंतु हम क्या करने के लिए आये हैं यह पता होना आवश्यक है। भूख लगने पर भोजन करना, प्यास लगने पर पानी पीना, नींद आने पर सो जाना, कामतृप्ति आदि तो सभी प्राणी करते ही हैं। हम भी यदि इतना ही कर रहे हैं तो यह जीवन की सार्थकता नहीं है, हमारे में और पशु-पक्षियों में कोई अन्तर नहीं है। संतों का कहना है कि बड़े भाग्य से मनुष्य का जन्म मिलता है। दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर भी केवल अपने लिए जीना पशु की भांति जीना ही है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'सत्संग से होता है संशय निवारण'

23 फरवरी को शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर विदाई देते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि इन तीन दिनों में यहाँ एक छोटा सा यज्ञ, अनुष्ठान हमने किया और जो हमारे पास था उसको अर्पित किया। तेरा तुझको अर्पण के भाव के साथ हमने स्वयं को परमेश्वर को सौंपा। संघ इसका माध्यम बना। जिसको यह अनुभूति हो जाती है कि ईश्वर सभी जगह है वह स्वयं ईश्वर ही बन जाता है। किंतु सत्संग के बिना संशय नहीं मिटता, भ्रांतियाँ नहीं मिटती। जैसे गरुड़ जी को संशय हुआ कि जो भगवान राम स्वयं के ऊपर पड़े नागपाश को नहीं काट सकते वे संसार के बंधनों को कैसे काट सकते हैं? शिवजी के कहने पर गरुड़ कागभुशुण्डि जी के पास गए और उनके सत्संग में रहने पर उनके संशय का निवारण हुआ। हमने भी तीन दिन तक श्री क्षत्रिय युवक संघ का ऐसा ही सत्संग किया है। इन तीन दिनों तक हम प्राप्ति के लिए दौड़े नहीं। हमारी सभी कामनाएं, वासनाएं इन तीन दिनों के लिए शांत हो गईं। जैसा कहा गया वैसा ही हमने किया।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

जाति और जातिवाद विषय पर विचार गोष्ठी

माननीय संघ प्रमुख श्री के जोधपुर प्रवास के दौरान 16 फरवरी को संभागीय कार्यालय 'तनायन' में विभिन्न जाति समुदायों के लोगों की एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय 'जाति एवं जातिवाद' रखा गया। प्रारम्भ में विषय को स्पष्ट करते हुए बताया गया कि आजादी के बाद से ही जातिगत विभाजन को मिटाने के लिए जातियों को मिटाने के प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन जातियां मिटी नहीं और बढ़ते जातिवाद के कारण जातीय विभाजन अधिक दृढ़तर होता जा रहा है। ऐसे में हमारा प्रयास जाति व्यवस्था

की विकृति जातिवाद को मिटाने का होना चाहिए या संपूर्ण जाति व्यवस्था को ही मिटाने का होना चाहिए। इस विषय पर विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार साझा किए। अनेक ने जातीय भेद को मिटाने का प्रयास करने की बात कही वहीं जातीय श्रेष्ठता नेष्ठता की भावना को घातक बताया। कुछ लोगों ने जाति व्यवस्था को ही दोषपूर्ण बताया। अंत में माननीय संघ प्रमुख श्री ने अपने संबोधन में कहा कि आज हम जो एक साथ बैठकर यह संवाद कर रहे हैं इसका बीज बड़ा पुराना है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

भारत की वर्तमान व्यवस्था में विधायकों एवं सांसदों को कानून निर्माण में अपनी महत्ती भूमिका निभाने का दायित्व दिया गया है। वे एक बड़े जनसमूह के प्रतिनिधि होते हैं और इतने बड़े जन समूह से वे भली प्रकार सम्पर्क रख सकें इसके लिए सरकार द्वारा इन्हें विभिन्न सुविधाएं दी जाती हैं। इन सुविधाओं में मुफ्त आवास सहित कई प्रकार के भत्ते दिए जाते हैं। लेकिन अधिकांश विधायक एवं सांसद इन सुविधाओं को भी अपनी कमाई का साधन बना लेते हैं। इन सबको देश या प्रदेश की राजधानी में आवास मिलता है और वहां आवास किराए पर लेने वालों की भीड़ होती है। ऐसे में सांसद, विधायक स्वयं को मिले आवास किराए पर देते हैं और वे इसे सामान्य व्यवहार ही मानते हैं। पूज्य तनसिंह जी 1977 में दूसरी बार सांसद बने तो उनको भी दिल्ली में आवास मिला। उनके पास भी आवास किराए लेने वाले लोग आने लगे लेकिन पूज्य श्री उनको मना करते रहते थे। एक बार उनके पास एक व्यक्ति तत्कालीन सरकार के एक वरिष्ठ केबीनेट मंत्री का सिफारिश पत्र लेकर आया जिसमें उन्होंने पूज्य श्री से उक्त व्यक्ति को उनको आवांटित आवास किराए पर देने के लिए आग्रह किया था। पूज्य श्री ने उक्त पत्र पर ही विनम्रता पूर्वक जवाब लिखकर भेजा कि यह आवास मुझे संसद द्वारा मेरी एवं मेरे क्षेत्र के मतदाताओं की सुविधा के लिए आवंटित किया है इसलिए मैं इसे किराए पर नहीं दे सकता। यदि उक्त सज्जन को मकान देना इतना ही आवश्यक है तो आप को सरकार ने मेरे आवास से कही बड़ा आवास आवंटित किया है। ऐसे में आप इसमें से कुछ हिस्सा इन्हें किराये पर दे देवें। ऐसे थे हमारे प्रणेता। आज विधायक या सांसद बनकर अपने आपको मिली सुविधाओं का ही नहीं बल्कि राष्ट्र के भी मालिक समझने वाले लोगों के लिए यह नजीर है कि एक जनसेवक को विशुद्ध रूप से जनसेवक ही बनकर रहना चाहिए और ऐसे में जनसेवक के रूप में भली प्रकार निर्वहन करने के लिए प्राप्त सुविधाओं को अपनी निजी कमाई का साधन नहीं बनाना चाहिए।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे....

- अभयसिंह रोडला

NEET - UG

NEET परीक्षा का पूरा नाम राष्ट्रीय पात्रता एवं प्रवेश परीक्षा -स्नातक स्तरीय (नेशनल एलिजिबिलिटी-कम-एंट्रेंस टेस्ट- अंडर ग्रेजुएट) है। भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया/डेंटल काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त सरकारी तथा निजी मेडिकल तथा डेंटल कॉलेजों में प्रवेश प्रदान करने हेतु इस परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस परीक्षा द्वारा MBBS अथवा BDS जैसे स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रम में प्रवेश मिलता है। AIIMS, ZIPMER जैसे मेडिकल संस्थानों में भी इसी परीक्षा के आधार पर प्रवेश मिलता है। इसके लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा जीव विज्ञान विषयों के साथ बारहवीं परीक्षा उत्तीर्ण होना है। सामान्य श्रेणी के अभ्यर्थी हेतु 12वीं कक्षा में न्यूनतम 50% अंक प्राप्त करना अनिवार्य है। अभ्यर्थी का भारतीय नागरिक होना आवश्यक है तथा सामान्य श्रेणी के अभ्यर्थी हेतु आयु सीमा 17 से 25 वर्ष होती है। आवेदन शुल्क 1500 रुपये है। परीक्षा हेतु केवल ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है।

परीक्षा का आयोजन नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा किया जाता है। विदेश में जाकर स्नातक स्तरीय मेडिकल कोर्सेज में प्रवेश करने से पूर्व भी NEET UG को क्वालीफाई करना होगा। यह परीक्षा वर्ष में एक बार आयोजित होती है। परीक्षा की अवधि 3 घंटे की होगी। परीक्षा में कुल 180 बहुवैकल्पिक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें प्रत्येक सही उत्तर के लिए 4 अंक दिए जाएंगे। प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जाएगा। भौतिक विज्ञान से 45, रसायन विज्ञान से 45 तथा जीव विज्ञान से 90 प्रश्न पूछे जाएंगे। परीक्षा ऑफ लाइन अर्थात पेन-पेपर आधारित होगी। परीक्षा में माध्यम के रूप में अंग्रेजी तथा हिंदी सहित कुल 11 भाषाओं में से कोई भी एक चुनी जा सकती है।

NEET UG परीक्षा की विस्तृत जानकारी **ntaneet.nic.in** पर जाकर प्राप्त की जा सकती है।

क्रमशः...

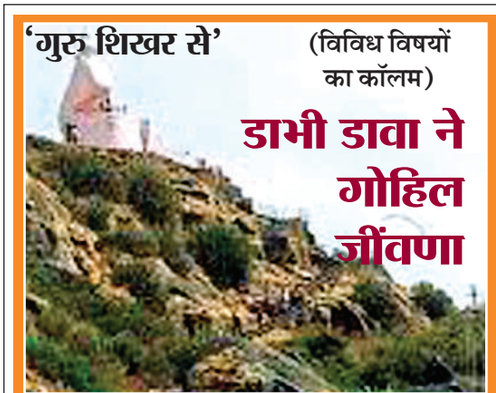

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

वर्तमान कन्नौज (उत्तरप्रदेश) के भू-भाग पर राष्ट्रकूट क्षत्रियों का राज्य था। इस राजवंश के राव सीहा अपने दो सौ साथियों के साथ पुष्कर, पाली, भीनमाल, पाटन होकर तीर्थयात्रा पर द्वारका (गुजरात) जाते हैं। द्वारका से वापिस कन्नौज लौटते समय पाली के पालीवाल ब्राह्मण जो कि उस समय यहां के बड़े व्यापारी हुआ करते थे- राव सीहा से अनुरोध करते हैं कि हमारी रक्षार्थ आप यहीं रुक जाएं, हम आपको अपना शासक मानते हैं। पाली उस समय धनाढ्य नगरी थी तथा भारत के यूरोप तथा पश्चिमी एशिया के साथ हो रहे व्यापारिक कारवों की केन्द्र बिन्दु थी। लुटेरे एवं कई आक्रान्तों पालीवालों को लूट लेते थे। अतः राव सीहा ने उनकी रक्षार्थ यहीं पर बसने का निर्णय लिया। मारवाड़ की धरा पर आकर राव सीहा के वंशज 'राठौड़' के उपनाम से प्रसिद्ध हुए। राव सीहा ने लुटेरों का दमन किया एवं पाली के आसपास के क्षेत्र पर अपनी हुकूमत कायम की। राव सीहा की 1273 ई. में मृत्यु हो गई। कालान्तर में राव सीहा के बड़े पुत्र राव आसथान ने खेड़ नगर (बाड़मेर में बालोतरा के पास) को अपनी राजधानी बनाने के लिए गोहिल क्षत्रियों को हराया। खेड़ नामक स्थान पर रहने के कारण आस्थान के वंशज खेड़ेचा राठौड़ कहलाए। राव सीहा के दूसरे पुत्र सोनगा ने अपने भाई आस्थान की सहायता से कोली ठाकरड़ों को मारकर ईडर (हिम्मत नगर, गुजरात) में राज्य स्थापित किया और ईडरिया राठौड़ कहलाए। सीहाजी के तीसरे पुत्र अज ने ओखा द्वारका के स्वामी चावड़ा भोजराज को मारकर अपना राज्य समुद्र किनारे स्थापित किया। अपनी तलवार के वार से अज ने वहां के राजा को मस्तक काटा (वाढा) था, इसलिए इनके वंशज बाढ़ेल राठौड़ कहलाए। राठौड़ खांप लिखने वाले सब लगभग राव आस्थान जी के वंशज ही हैं। आस्थान के बाद उनके आठ पुत्रों में सबसे बड़े धूहड़ खेड़ के शासक बने। राठौड़ों की कुलदेवी मां नागणेचियां की मूर्ति धूहड़ ही ले आए थे। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि धूहड़ कोंकण (वर्तमान कर्नाटक एवं महाराष्ट्र के मध्य का क्षेत्र) या कर्नाट से कुलदेवी चक्रेश्वरी की मूर्ति लाए थे। कुछ मानते हैं कि मूर्ति कन्नौज से लाई गई थी। नागाणा (बाड़मेर) गांव में नीम के पेड़ के नीचे प्रतिष्ठित करने के कारण चक्रेश्वरी माता नागणेच्ची जी कहलाई। कुछ लोग कहते हैं कि देवी ने धूहड़ को नागीन के रूप में दर्शन दिए थे, इसीलिए इनका नाम नागणेच्ची पड़ा। नीम के पेड़ के नीचे मूर्ति प्रतिष्ठित करने के कारण राठौड़ कुल के लोग नीम को अपना पवित्र वृक्ष मानते हैं तथा इसे काटते एवं जलाते नहीं हैं। आस्थान के आठ पुत्रों में से धांधला, बानर एवं उहड़ नाम से राठौड़ों की उपखांपे चली। लोकदेवता पाबूजी राठौड़ धांधल जी के पुत्र थे। बांदर जी के वंशज ढूंढा, बांदरा, चान्देसरा, अकदड़ा (बाड़मेर) आदि जगह निवास करते हैं। उहड़ जी के वंशज कोरणा (नागाणा के पास) तथा जालोर में तिलोड़ा, तूरा आदि गांवों में निवास करते हैं। धांधल राठौड़ कोलू पाबूजी (फलोदी), महाबार (बाड़मेर) व अन्य कई गांवों में अल्पसंख्या में निवासरत हैं।

राव सीहा के मारवाड़ के आगमन से पूर्व खेड़ नगर पर गोहिलों (गहलोत क्षत्रिय) का राज्य था। गोहिल राजा की कन्या का विवाह राव सीहा के पुत्र आस्थान से होना तय हुआ। गोहिल नरेश का प्रधानमंत्री सांवतसी डाभी था। डाभी अपने को सूर्यवंशी तथा कुशवाह वंश से मानते हैं। मेहसाणा के पास डांगरबा रियासत डाभियो की है तथा गुजरात में कई जगह डाभी क्षत्रिय पाए जाते हैं। गोहिल राजा एवं डाभी मंत्री में आपस में मनमुटाव था। डाभी सांवतसी ने आस्थान जी को समझाया कि विवाह के समय गोहिल वंशी दांयी तरफ (जीवणा) एवं डाभी लोग बांई (डावी) तरफ बैठे हों तब आप गोहिलों पर आक्रमण कर खेड़ को अपने अधिकार में ले लेना एवं मुझे आधा राज्य का हिस्सा दे देना। यह सुन आस्थान जी को विचार आया कि यह स्वामी भक्त नहीं है अतः यह समय आने पर आगे मेरे साथ भी धोखा कर सकता है। परन्तु वे उस समय तो चुप रहे किन्तु समय आने पर इनके इशारे से इनके साथी सरदारों ने डाभी एवं गोहिल मुखियों को मार डाला। गोहिलों ने हारकर खेड़ छोड़ दिया ओर यहां पर राठौड़ों का अधिकार हो गया। यह घटना राठौड़ों के मारवाड़ में पांव जमाने के लिए मील का पत्थर साबित हुई। गोहिल यहां से गुर्जर प्रदेश चले गए एवं काठियावाड़ में भावनगर, पालीताणा, लाठी, वलभीपुर आदि के राजवंश इन्हीं गोहिलों के वंशज हैं। तब से मारवाड़ में कहावत है कि 'डाभी डावा ने गोहिल जींवणा'। इसका अर्थ कि दांये एवं बांये दोनों तरफ से एकत्र हुए लोग अविश्वसनीय एवं शत्रु हो सकते हैं। इसीलिए सर्तकता हर समय पर सार्थक रहती है।

(पृष्ठ एक का शेष)

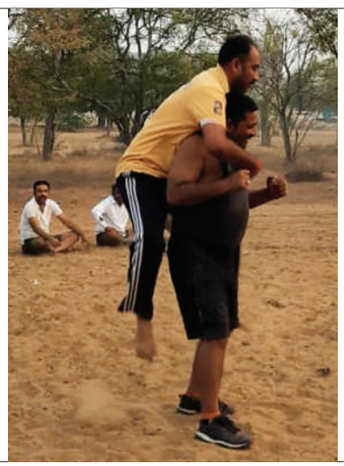

हाथोज...

शिविर अनुभव के दौरान अपने अनुभव बताते हुए सभी ने इसे अपने जीवन का अनूठा अनुभव बताया एवं आगे के जीवन में निरन्तर संघ से जुड़े रहकर अपने आपको संघ के अनुकूल बनाने का संकल्प प्रकट किया।

शिविर में जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, चुरू, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालोर, सिरोही, पाली, उदयपुर, भीलवाड़ा आदि जिलों से 80 सहयोगियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर की व्यवस्था का जिम्मा फाउण्डेशन की केन्द्रीय टीम के सदस्य श्रवणसिंह बगड़ी ने संभाला। फार्म हाउस के मालिक एवं राजस्थान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता परसराम मोरदिया अपनी अस्वस्थता के कारण शिविर स्थल पर तो नहीं आ पाए लेकिन अपने स्टाफ के माध्यम से लगातार समाचार लेते रहे एवं शिविर में सहयोग के निर्देश देते रहे।

'सर्वस्व हासिल करवाती है गीता'

गीता जीवन में सर्वस्व हासिल करने का मार्ग है और यथार्थ गीता उसकी सरल एवं यथार्थ व्याख्या है। यह अध्ययन और चिंतन मनन का ग्रंथ नहीं बल्कि जीवन में धारण किया जाने वाला ग्रंथ है। इसीलिए हमें इसे पढ़कर अपने जीवन में धारण करना चाहिए एवं अधिकतम लोगों तक पहुंचाने में सहयोगी बनना चाहिए। 17 फरवरी को नोखा में श्री क्षत्रिय युवक संघ के नोखा प्रांत द्वारा आयोजित सर्व समाज स्नेहमिलन में स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज ने उपर्युक्त बात कही। इस अवसर पर माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि गीता का महत्व इसको पढ़कर ही समझा जा सकता है। हम हमारे स्तर पर अनेक धर्मशास्त्रों का अध्ययन करते हैं लेकिन शास्त्र का यथार्थ अर्थ महापुरुषों के अनुभव में प्रकट होता है और ऐसे महापुरुषों का सानिध्य ही उसको समझने में सहायक होता है। यथार्थ गीता पूज्य स्वामी जी के अनुभव का ही प्रकटीकरण है, हमें इसका अधिकतम लाभ लेना चाहिए। प्रारंभ में पढ़ते हैं तो थोड़ा अटपटा लगता है लेकिन बार-बार पढ़ने पर यथार्थ अर्थ प्रकट होता है एवं शनैः शनैः अभ्यास के द्वारा यह हमारे जीवन में उतरनी प्रारंभ होती है। कार्यक्रम में नोखा नगरपालिका के अध्यक्ष नारायण झंवर, जिला परिषद सदस्य भूपेन्द्रसिंह कक्कू सहित नोखा क्षेत्र के नवनिर्वाचित सभी समाजों के सरपंच, अन्य जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

बिना टीके दहेज का विवाह, दिया शिक्षा नेग

संघ के दिवंगत स्वयंसेवक मेघसिंह जुलियासर के दोहिते एवं दिलीपसिंह कुकणवाली के पुत्र का विवाह 25 फरवरी को बिना दहेज व टीके के किया गया। बारातियों ने जुआरी भी नहीं ली। इसी प्रकार झुंझुनूं जिले के सुल्ताना निवासी प्रभुसिंह के पुत्र मनीषसिंह के विवाह में भी कन्या पक्ष द्वारा दिया गया 5.31 लाख का टीका विनम्रता पूर्वक लौटा दिया गया। इसी प्रकार सारुण्डा निवासी स्व. करणीसिंह सांखला की पुत्री सुमन कंवर के विवाह में वर कुलभानसिंह पुत्र अनोपसिंह पातावत पडियाल ने विनम्रता पूर्वक टीका लौटाकर 11000 रुपए शिक्षा नेग के रूप में प्रदान किए। गच्छीपुरा के दलपतसिंह ने भी अपने पुत्र के विवाह में मात्र एक रुपया व नारियल स्वीकार किया। जोधपुर के रामसिंह रोहिणा ने भी अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर एक लाख रुपए शिक्षा नेग के रूप में दिए। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव ने भी अपनी पौत्री के विवाह के अवसर पर एक लाख ग्यारह हजार रुपए शिक्षा नेग के रूप में दिए।

अनूठा दहेज

गुजरात के राजकोट जिले के गांव नानामवा के हरदेवसिंह जाड़ेजा ने अपनी विदुषी पुत्री किन्नरी बा को दहेज में कन्या के वजन के बराबर वजन की कुल 2200 पुस्तकें भेंट की है। किन्नरीबा ने भारतीय साहित्य, व्याकरण के साथ-साथ गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं का अध्ययन अधिकार पूर्वक किया है। उन्होंने वेद, उपनिषद, गीता, पुराण, रामचरित मानस आदि ग्रंथों का गहन अध्ययन भी किया है। उनका विवाह बड़ोदा के निकट के सरवैया परिवार में हुआ है जो वर्तमान में कनाड़ा में निवासरत है। जिनको भी इस अनूठे दहेज की जानकारी मिल रही है सभी किन्नरी बा की अध्ययनशीलता की प्रशंसा कर रहे हैं।

भूपेन्द्रसिंह हाड़ा को विशिष्ट सेवा मेडल

बूंदी जिले के चौतरा का खेड़ा निवासी भूपेन्द्रसिंह हाड़ा को भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा परम विशिष्ट सेवा मेडल से नवाजा गया है। पेराशूट रेजिमेंट में ब्रिगेडियर के रूप में कार्यरत हैं।

(पृष्ठ एक का शेष)

सत्संग..

भगवान की सबसे बड़ी वन्दना यही है कि उनकी सेवा की जाय। भगवान की सेवा उनके इशारों को समझकर, उनकी आज्ञा का पालन करके की जा सकती है। साकार की उपासना से ही निराकार तक पहुंचा जा सकता है। हमने भी केशरिया ध्वज को उस परमशक्ति के साकार स्वरूप के रूप में देखा है। गीता में भगवान कहते हैं कि मैं सभी प्राणियों के हृदय में विद्यमान हूँ। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना अन्तर की साधना है। भीतर बैठे ईश्वर को जाने बिना न सेवा की जा सकती है न भक्ति की जा सकती है। उस ईश्वर को जानने का उपाय हमने इन तीन दिनों तक यहां किया। हम जो कुछ चाहते हैं वह सब हमारे भीतर बैठे उस ईश्वर की प्राप्ति में समाहित है। परंतु ईश्वर को प्राप्त करने के लिए हमारे अंतःकरण की निर्मलता आवश्यक है और वह निर्मलता आती है सत्कर्मों से। भगवान को आले में सजाकर उसकी पूजा करना मात्र तो भगवान से पिंड छुड़ाना है। यहां आपको जो संदेश दिया गया है उसको हृदय में उतारना है तभी संशयों का निवारण होगा।

मैं आपको सदैव अपने पास रखना चाहता हूँ, विदाई नहीं देना चाहता। मैं आपको सदैव अपनी स्मृति में रखता हूँ आप चाहें तो मुझे भूल जाएं। पूज्य तनसिंह जी ने एक बार विदाई देते हुए कहा था कि 'मुझे एक स्त्री का स्पष्ट चित्र दिखाई देता है जिसकी एक आंख में आंसू है और एक में मुस्कुराहट है।' वह आंसू हमारी कौम की दुर्दशा का प्रतीक है। उस दुर्दशा को मिटाने के लिए संघ की आशा आप पर टिकी है। अनुशासन और संयम का अभ्यास आपने तीन दिनों तक यहां किया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का सुख और शांति का संदेश आप लेकर संसार में जा रहे हैं। यहां तीन दिनों में आपने अपनी इन्द्रियों पर, मन पर जो छोटी सी विजय प्राप्त की है वहीं संसार में आपकी दिग्विजय का आधार बनेगी। संसार में रहकर आपको संघर्ष करना है परंतु ईश्वर को सदैव स्मरण रखें। जहां ईश्वर है वहीं विजय है।

संपादकीय

जातीय गौरव और हम

विगत दिनों माननीय संघ प्रमुख श्री के जोधपुर प्रवास के दौरान 'जाति एवं जातिवाद' विषय पर एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें अनेक वक्ताओं ने कहा कि हमें अपना जातीय गौरव बनाए रखते हुए सभी के साथ सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए। वहीं कुछ लोगों का मानना था कि जातीय गौरव की बात जातीय श्रेष्ठता और नेष्ठता का भाव पैदा करती है इसलिए जातीय गौरव की बात सद्भाव में बाधक है। उनकी बात एक हद तक सही भी है कि जिन जाति समाजों का भारतीय समाज में सेवा का काम था वे आज की भाषा में किस बात पर गौरव करें और क्या हम भी उनके उस काम को गौरवपूर्ण मानते हैं? हालांकि सैद्धांतिक रूप से यह सही है कि काम कोई भी छोटा बड़ा नहीं होता लेकिन क्या यह सिद्धांत हमारे व्यवहार में उतर पाया है? लेकिन क्या इसका अर्थ यह लगाया जाए कि हमें जातीय गौरव नहीं रखना चाहिए? क्या हमें इस बात पर भी गर्व नहीं करना चाहिए कि हम महान पूर्वजों की संतान हैं? क्या हमें इस बात का भी गौरव नहीं करना चाहिए कि हम उस कौम में जन्में हैं जिसने सारे संसार को मार्ग दिखाया? आप कह सकते हैं कि आपके दादोसा के दादोसा ने महान कार्य किया और उस परिवार में जन्म लेने का आपको गर्व है तो आप उस गर्व को केवल इसलिए कैसे त्याग सकते हैं कि उससे अन्य किसी के मन में हीन भावना पैदा होती है? व्यवहारिक रूप से आपका तर्क सही हो सकता हैं, आप इस तर्क के सहारे किसी अन्य के ऐसे ही प्रश्नों को निरूत्तर भी कर सकते है लेकिन इन प्रश्नों को निरूत्तर कर देने से आप उसकी हीन भावना को तो दूर नहीं कर सकते। ऐसे में पहला और अंतिम उपाय यह ही है कि हम हमारे पूर्वजों की ही भांति बनें और फिर गौरव का अनुभव करें।

माननीय संघ प्रमुख श्री अनेक बार कहते हैं कि कीमत खोखे (खाली कार्टून) की नहीं हुआ करती बल्कि खोखे के अन्दर के सामान की होती है। ऐसे में हमारे लिए विचारणीय यह है कि हम जिस जातीय गौरव की बात करते हैं, क्या हमारे में वे जातीय गुण विद्यमान हैं जिनके कारण गौरव होना चाहिए या फिर हम इन गुणों के खोखे मात्र बचे हैं। यदि हम खोखे मात्र नहीं हैं और हमारे में वे गौरवशाली परम्पराएं निवास करती है, जिनके कारण जातीय गौरव प्रकट होता है तो फिर हमें अपना जातीय गौरव प्रकट करने की भी आवश्यकता नहीं है, दुनियां स्वयं हमारे साथ में गौरवान्वित महसूस करेगी। लेकिन यदि खोखे अपने जातीय गौरव का प्रकटीकरण करेंगे तो उसमें श्रेष्ठता और नेष्ठता का भाव आए बिना नहीं रह सकता और यही भाव हमें खंड खंड कर विखंडित कर देता है। हमारा जातीय गौरव अन्यों के समक्ष प्रकट करने को नहीं बल्कि अपने आपके सामने प्रकट करने के लिए है जिससे हम उससे प्रेरणा लेकर अपनी तुच्छता का अहसास कर सकें और उस तुच्छता का त्याग करने को गतिमान हो सकें। ऐसे में वह जातीय गौरव हमारे लिए अपने आप पर प्रश्नचिह्न है, हमारे लिए प्रेरणा है, हमारे लिए मंजिल है लेकिन यदि हम उससे प्रेरणा लेकर उधर बढ़े बिना केवल खोखे बने रहकर गौरव की बात करते हैं तो यह गौरव हमें मिथ्याभिमानी ही बनाता है। हमारे विनय को मिटाकर अहंकारी बनाता है और अहंकार कभी भी जोड़ने की बात को स्वीकार नहीं करता। वह जुड़ना चाहता है तो भी अपने आपको संतुष्ट कर जुड़ना चाहेगा और अहंकार की संतुष्टि श्रेष्ठता नेष्ठता में ही संभव है। अहंकारी व्यक्ति अपने आपको अन्यों से श्रेष्ठ मानता है और ऐसे में वह अन्यों के साथ यदि सम्मानपूर्वक व्यवहार करता है तो उसमें भी बड़प्पन का प्रदर्शन किए बिना नहीं रहता। इसलिए आवश्यक है कि हमें इस बात का अहसास रहे कि हम उन महान पूर्वजों की संतान हैं जिनके अनुपम त्याग के बल पर यह महान संस्कृति पल्लवित एवं पुष्पित हुई है लेकिन यह अहसास यदि हमें उस ओर बढ़ने की प्रेरणा नहीं देता है तो व्यर्थ है और मिथ्या आडंबर का निर्माण करता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ एक ऐसे ही जागृत व्यक्ति की पीड़ा का साकार रूप है जिन्होंने इस जातीय गौरव का इस रूप में अहसास किया कि मैं उस उज्ज्वल परम्परा का संवाहक होने के बावजूद भी इतना नीचे के स्तर पर कैसे आ गया और यदि नीचे के पायदान पर आ गया हूं तो उसे ईमानदारी से स्वीकार करूं और उन ऊंचाइयों की ओर की यात्रा को प्रारम्भ करूं। संघ आज उसी पीड़ा का प्रसार कर रहा है और अपने निकट आने वालों को उस पीड़ा से पीड़ित कर चलायमान कर रहा है।

खरी-खरी

संविधान और धर्मशास्त्र

किसी भी समाज, राष्ट्र या अन्य संस्थान को चलाने के लिए एक व्यवस्था बनाने हेतु कुछ नियम उपनियम बनाए जाते हैं वे उक्त समाज, राष्ट्र या संस्थान का संविधान कहलाता है। यह संविधान अलग-अलग समय एवं संस्था के अनुसार अलग-अलग होता है। यदि कोई संविधान पूरे देश की व्यवस्था को चलाने के लिए बनाया जाए तो वह पूरे देश का संविधान माना जाता है। ऐसे ही देश के अन्दर कोई संस्थान संचालित होता हो तो उसका अपना संविधान होता है। हालांकि उक्त संस्थान यदि उस राष्ट्र की व्यवस्था के तहत काम करता है तो उक्त राष्ट्र का संविधान भी उस पर लागू होता है और उसका संविधान व उक्त राष्ट्र का संविधान आपस में टकराए तो राष्ट्र का संविधान ही मान्य होगा। इसी प्रकार राष्ट्रों ने मिलकर कोई संघ बनाया हो तो उक्त संघ का अपना संविधान होगा और वह समस्त सदस्य राष्ट्रों को मानना पड़ेगा। यदि राष्ट्र का संविधान उक्त संघ के संविधान से टकराएगा तो संघ का संविधान ही मान्य होगा। इस प्रकार अलग-अलग समय में अलग-अलग संविधान प्रचलित रहे हैं। किसी समय भारत देश में मनु स्मृति आदि संविधान के रूप में मान्य थे तो आज भारत का संविधान अलग है। संविधान समय के साथ अद्यतन भी होता रहता है क्यों कि व्यवस्था सदैव एक जैसी नहीं रहती। व्यवस्था की आवश्यकताएं भी सदैव एक जैसी नहीं रहती। उन आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवस्था को बनाने के लिए संविधान में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। इस पूरे विवेचन से स्पष्ट है कि संविधान कोई स्थाई ग्रंथ नहीं है। यह सदैव बना रहने वाला शाश्वत ग्रंथ नहीं है। इस प्रकार संविधान एक ऐसा शास्त्र है जो व्यवस्था के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक है और उसकी यह विशेषता है कि वह व्यवस्था के अनुरूप निरन्तर अद्यतन होता रहता है।

शीर्षक का दूसरा शब्द धर्मशास्त्र है । धर्म एक ऐसी प्रक्रिया का नाम है जो व्यक्ति को परमेश्वर तक की यात्रा करवाती है। धर्म उसी प्रकार स्थायी तत्व है जिस प्रकार परमेश्वर। धर्म उतना ही शाश्वत होता है जितना परमेश्वर। क्योंकि शाश्वत को पाने की प्रक्रिया तब तक बनी रहती है जब तक शाश्वत बना रहता है। अशाश्वत प्रक्रिया से शाश्वत को हासिल नहीं किया जा सकता। इसीलिए धर्म की प्रक्रिया अपरिवर्तनीय मानी जाती है। हमें संसार में इस प्रक्रिया की जो विभिन्नता दिखाई देती हैं वह वास्तव में प्रक्रिया की विभिन्नता नहीं होती बल्कि उस प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों का वर्णन होता है। परमेश्वर को प्रभु भी कहा जाता है अर्थात वह समस्त विभूतियों का स्वामी होता है। जो भी उसकी तरफ बढ़ता है उसको उन विभूतियों का साक्षात्कार होता है और वे विभूतियां व्यक्ति को परमेश्वर के निकट ले जाती है या निकटता के अहसास की अवरोधी परतों को हटाती है इसलिए हर व्यक्ति उक्त यात्रा का वर्णन अपने स्तर अनुसार करता है।

ऐसे विभिन्न स्तरों पर पहुंचे व्यक्ति अपने-अपने स्तरनुसार वर्णन करते हैं इसलिए उन वर्णनों में विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है। वही व्यक्ति जब अगले स्तर पर बढ़ता है तो उसका वर्णन भी बदल जाता है। इस प्रकार धर्म के विभिन्न स्वरूप या धर्मशास्त्रों की विभिन्नताएं वास्तव में विभिन्नता नहीं होती बल्कि एक ही यात्रा के विभिन्न पड़ावों का वर्णन होती है। इस प्रकार धर्मशास्त्र किसी परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तनीय नहीं होते बल्कि एक स्थायी एवं शाश्वत प्रक्रिया के विभिन्न पड़ावों का वर्णन होते हैं। इसमें यात्री जब आगे वाले पड़ाव पर जाता है तो उसके लिए पिछले पड़ाव का महत्व समाप्त हो जाता है। लेकिन पीछे चलने वाले के लिए बना रहता है इसलिए उसकी उपयोगिता कभी समाप्त नहीं होती।

अब हमारे सामने प्रश्न यह है कि क्या संविधान धर्मशास्त्र हो सकता है? हमारे नेता देश के संविधान को धर्मशास्त्र घोषित करते रहते हैं तो क्या वास्तव में संविधान धर्मशास्त्र हो सकता है? जैसा हमने देखा कि धर्म व्यक्ति की परमेश्वर तक की यात्रा का वर्णन है तो क्या संविधान में ऐसी किसी यात्रा का वर्णन है? क्या धर्मशास्त्र की तरह संविधान शाश्वत और स्थायी होता है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर ना में ही आएंगे ऐसे में हमारे नेताओं का यह उद्घोष कि संविधान हमारा धर्मशास्त्र है क्या सही है? हां, संविधान देश की व्यवस्था को चलाने का पवित्र दस्तावेज है और हमारे यहां हर वस्तु का महत्व बढ़ाने के लिए उसे धर्म से जोड़ा जाता है और इस अर्थ में संविधान का महत्व स्थापित करने के लिए धर्मशास्त्र बताया जाता है तब तक तो ठीक है लेकिन राजनेताओं द्वारा अपनी सुविधाओं के अनुसार इसे धर्मशास्त्र घोषित करना एक प्रकार का झांसा है। हमें यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि संविधान धर्मशास्त्र नहीं है। गीता धर्मशास्त्र है। रामायण धर्मशास्त्र है। उपनिषद धर्मशास्त्र है। कुरान या बाइबल धर्मशास्त्र हो सकती है। कबीर के साधना परक भजन धर्मशास्त्र हो सकते हैं लेकिन संविधान व्यवस्था शास्त्र है धर्मशास्त्र नहीं है। धर्मशास्त्र वही है जो धर्म को प्रतिपादित करता हो और संपूर्ण धर्म का प्रतिपादन तो भगवान श्री कृष्णोक्त गीता में ही है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	11 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर (बालक)	18.05.2020 से 28.05.2020 तक	**श्री कच्छ कड़वा पाटीदार विद्याधाम, पिराना, अहमदाबाद (गुजरात)** (सरदार पटेल रिंग रोड से 2 किमी अंदर)
2.	11 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर (बालिका)	18.05.2020 से 28.05.2020 तक	**प्राथमिक शाला, काणेटी, अहमदाबाद (गुजरात)**

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

कानसिंह वैरावत का 452वां बलिदान दिवस

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वैरावत राठौड़ शाखा के कानसिंह वैरावत का 452वां बलिदान दिवस 24 फरवरी को पाली जिले के रानी खुर्द गांव में मनाया गया।

कार्यक्रम संयोजक गोविन्दसिंह के अनुसार कार्यक्रम में 24 फरवरी 1568 को चित्तौड़गढ़ में मातृभूमि की रक्षार्थ वीरगति को प्राप्त कानसिंह वैरावत की शौर्य गाथा का वर्णन किया गया एवं उनसे प्रेरणा लेकर कर्तव्य पालन के लिए आगे आने का आह्वान किया गया।

हर्षवर्द्धन

(गतांक से आगे...) इन विजयों के बाद हर्ष ने बलभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को परास्त किया। पराजित ध्रुवसेन को उसका राज्य वापिस लौटा कर हर्ष ने उसे अपने मित्र और विश्वस्त सहयोगी बना लिया। बलभी विजय के पश्चात हर्ष ने सिंध प्रदेश पर आक्रमण किया और वहां के शासक को परास्त किया जो कि धर्मानुकूल शासन नहीं कर रहा था। अब हर्ष समस्त उत्तर भारत का सम्राट बन चुका था। हर्ष के राज्य की पश्चिमी सीमा नर्मदा नदी के तट तक पहुंच चुकी थी जबकि दक्षिण में इस समय हर्ष का समकालीन चालुक्य वंश का पुलकेसिन द्वितीय शासन कर रहा था जो कि एक शक्तिशाली शासक था। पुलकेशिन उत्तर भारत में अपना साम्राज्य विस्तार करना चाहता था। वही हर्ष अपने राज्य का विस्तार दक्षिण में चाहता था। दोनों शासकों की महत्वाकांक्षा उन दोनों को युद्ध भूमि में एक-दूसरे के समक्ष ले आई। हर्ष और पुलकेशिन के मध्य यह युद्ध नर्मदा नदी के किनारे 630 ई. से 634 ई. के मध्य हुआ था। दोनों के मध्य हुए इस भयंकर युद्ध के बारे में इतिहासकार एक मत नहीं है। जहां कुछ इतिहासकार पुलकेशिन द्वितीय की सोहेल प्रशस्ति के काव्यात्मक विवरण के आधार पर हर्ष की पराजय को स्वीकार करते है। वहीं कुछ विद्वान युद्ध को अनिर्णित मानते हुए इस पर बल देते है कि इस युद्ध के द्वारा हर्ष के साम्राज्य का दक्षिण की ओर विस्तार रुक गया था।

हर्ष का साम्राज्य विस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विंध्याचल पर्वत तक तथा पूर्व में कामरूप से पश्चिम में सौराष्ट्र तक विस्तारित था जिसमें अधिकांश भाग हर्ष के प्रत्यक्ष नियंत्रण में था तो कुछ भाग पर अधीनस्थ शासक शासन करते थे। हर्ष एक प्रजाहितैषी लोक कल्याण में रत रहने वाला शासक था। हर्ष अपने शासन काल के हर पांचवे वर्ष में प्रयाग में एक समारोह आयोजित करता था जिसे महा मोक्ष परिषद कहा जाता था इस समारोह में वह सभी धर्मों के विद्वानों को प्रचुर दान किया करता था। प्रयाग के इस धार्मिक समारोह में हर्ष दीन-दुखियों, अनाथों व जरुरतमंदों में पहने हुए वस्त्रों के अतिरिक्त अपने सम्पूर्ण राजकोष को खाली कर देता था ऐसे ही एक आयोजन में चीनी यात्री ह्वेनसांग भी सम्मिलित हुआ था।

हर्ष शिक्षा एवं साहित्य की उन्नति के लिए सदैव तत्पर रहा था। हर्ष विद्वानों का संरक्षक ही नहीं स्वयं भी उच्च कोटि का विद्वान था। संस्कृत में लिखे प्रियदर्शिका, रत्नावली तथा नागानन्द हर्ष की उच्च कोटि की साहित्य रचना है। हर्ष के दरबार में 'हर्ष चरित' व 'कादम्बिरी' के रचियता बाणभट्ट , 'सूर्यशतक' के रचियता मयूर, मातंग दिवाकर, बह्मगुप्त आदि अनेक विद्वान आश्रय पाते थे। एक विजेता तथा साम्राज्य निर्माता होने के साथ-साथ हर्ष एक कुशल प्रशासक भी था। हर्ष द्वारा प्रतिपादित शासन व्यवस्था हर्ष के परवर्ती शासकों के लिए भी अनुकरणीय बनी रही। हर्ष एक प्रजावत्सल शासक था और प्रजा के कल्याण को ही उसने अपने शासन का आदर्श बनाए रखा। निःसंदेह हर्ष महान भारतीय शासकों की श्रृंखला का एक उज्ज्वल सितारा था।

फार्म-4 (नियम-8)

1. प्रकाशन स्थान	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
2. प्रकाशन अवधि	पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
4. प्रकाशक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012
5. सम्पादक का नाम	लक्ष्मणसिंह
नागरिकता	भारतीय
क्या विदेशी है	नहीं
पता	ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार व हिस्सेदार हों।	पूर्ण स्वामित्व-श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास ए-8, तारानगर,झोटवाड़ा, जयपुर

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

लक्ष्मणसिंह
01-03-2020 प्रकाशक

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

क्या है मोदी के समक्ष चुनौतियां

एक ऐसा दौर जिसमें चारों तरफ यही सुनाई देता है कि 'मोदी है तो मुमकीन है' में मैं यह लिखने का साहस कर रहा हूं कि क्या है मोदी की चुनौतियां। चुनौतियों को सही रूप में समझने के लिए मोदी को जो कुछ विरासत में मिला उस पर दृष्टिपात करना होगा तभी हम चुनौतियों को सही रूप से समझ पाएंगे। सन् 2014 के आम चुनाव के बाद मोदी युग का राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति में प्रादुर्भाव हुआ, जैसा कि हर बड़ा नेता, हर बड़े चुनाव में करता है, उसी तर्ज पर बड़े-बड़े वादों के साथ मोदी जी भारत की सत्ता पर काबिज हुए। 2014 से पहले का राजनीतिक परिदृश्य हम देखें तो पाते हैं कि राजनीतिक विश्वसनीयता का जैसा ह्रास उस काल में हुआ, वैसा कभी भी नहीं हुआ। मनमोहन सरकार के द्वितीय कार्यकाल में लाखों करोड़ों रुपयों के घोटाले जन-जन के जुबान पर थे, हर 4-6 महीने के अन्तराल पर एक बड़ा घोटाला उजागर होता जो पिछले घोटाले से अधिक की राशि का होता। कोयला घोटाला, 2 जी स्पेक्ट्रम घोटाला, असली-नकली नोटों की छपाई का घोटाला, मीडिया समूह से रिश्वत लेने के मामले में रक्षा सौदों में कमीशन खोरी जैसे अनेकों घोटाले थे जिनके कारण जन मानस के मन में मनमोहन सरकार की विश्वसनीयता ना केवल समाप्त हो चुकी थी अपितु नकारात्मक थी। ऐसे में मोदी सरकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि किसी तरह राजनीतिक विश्वसनीयता पुनर्स्थापित की जाए। मोदी ने चुनाव के दौरान अपने भाषणों में राजनीतिक शुचिता स्थापित करने हेतु कुछ सकारात्मक बातें भी कही जिनमें एक प्रमुख बात थी कि संसद व विधानसभा में बैठे हुए राजनेताओं के विरुद्ध जो आपराधिक प्रकरण हैं उनका शीघ्रतापूर्वक निस्तारण होगा तथा इस प्रक्रिया द्वारा राजनीति के अपराधिकरण पर पूर्णविराम लगाया जाएगा, किन्तु मोदी जी के प्रधानमंत्री कार्यकाल में राजनीतिज्ञों के विरुद्ध लम्बित आपराधिक प्रकरणों के त्वरित निस्तारण हेतु कोई सकारात्मक पहल किसी भी स्तर पर दिखाई नहीं दी। यहां यह लिखना भी प्रासंगिक है कि 2014 में सत्ता संभालने के कुछ दिनों के अन्दर ही केन्द्रीय नेतृत्व के एक-दो व्यक्तियों के विरुद्ध अवश्य ही भ्रष्टाचार की कुछ अफवाहें सुनने को मिली किन्तु मोदी जी की त्वरित कार्रवाई के कारण उन पर भी विराम लगा तथा भविष्य में वैसी घटनाओं की पुनरावर्ति की संभावनाएं भी समाप्त हो गईं। यह सही है कि पहले कार्यकाल में बहुत बड़ा घोटाला आमजन की जानकारी में नहीं आया किन्तु यह तथ्य भी उतना ही सही है कि 10 से 50 करोड़ के खर्च की रैलियां कैसे आयोजित हो पा रही हैं इसको लेकर भी जन मानस के मन में संशय अवश्य है। राजनीतिक नेतृत्व के प्रति जहां देश के बहुसंख्यक लोगों के मनों में एक विश्वास का संचार हुआ है वहीं समाज के एक छोटे हिस्से में अविश्वास की एक गहरी खाई उत्पन्न हुई है जिसको पाटना मोदी जी के समक्ष एक चुनौती है। अविश्वास व संशय के इस माहौल में देश में अनेक विसंगतियों तथा विकृतियां जन्म ले रही हैं। कानून के शासन के प्रति एक नकारात्मक सोच निरन्तर विकसित की जा रही है। संसद द्वारा पारित सिटीजनशिप अमेडमन्ड एक्ट के विरुद्ध जिस तरह के हिंसक प्रदर्शन हुए वह एक अलग ही दिशा की ओर देश को धकेलने का प्रयास है। संसद में मुखर होकर सभी राजनीतिक दलों ने अपनी बात खुलकर रखी यह उनका दायित्व भी था तथा उनका अधिकार भी था किन्तु एक बार संसद द्वारा कानून पारित हो जाने के बाद देश के प्रत्येक नागरिक एवं राजनीतिक दलों का यह कर्तव्य है कि वे उस कानून का सम्मान करें। देश की अनेक विधानसभाओं द्वारा सिटीजनशिप एक्ट के विरुद्ध प्रस्ताव पास करना पूर्णतः गैर कानूनी एवं असंवैधानिक है जो देश के संघीय ढांचे के समक्ष एक गंभीर चुनौती है। सभी पार्टियों के कुछ वरिष्ठ एवं परिपक्व नेताओं ने अपनी ही पार्टी लाइन के विरुद्ध जाकर यह वक्तव्य दिए हैं कि सिटीजनशिप अमेण्डमन्ड एक्ट को पूरे देश को लागू करना होगा किन्तु कुछ नासमझ नेताओं के उकसावे में आकर अनेक दल सिटीजनशिप अमेण्डमन्ड एक्ट का विरोध कर रहे हैं। अपने ही दल के वरिष्ठ नेताओं द्वारा लिखे गए पूर्ववर्ती पत्रों को नकारते हुए देश में एक हिंसक वातावरण उत्पन्न करने की चेष्टा कर रहे हैं तथा पूर्णत आधारहीन, संदेहों व भ्रमों को फैलाया जा रहा है। ऐसे में मोदी के समक्ष सम्पूर्ण राजनीतिक तंत्र की विश्वसनीयता एवं देश के संघीय ढांचे की रक्षा तथा कानून के शासन की अवधारणा को मजबूत करना एक गंभीर चुनौती है।

-देवेन्द्रसिंह राघव

पिता की स्मृति में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

पाली जिले के सोजत क्षेत्र के गांव मामावास के मूल निवासी एवं वर्तमान में दुबई में व्यवसायरत कंवरपाल सिंह एवं शक्तिमान सिंह ने अपने पिता भैरोंसिंह जैतावत की स्मृति में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। जिसमें आसपास के ग्रामीणों के स्वास्थ्य की जांच की गई एवं मोतियाबिंद के निःशुल्क ऑपरेशन किए गए। इस अवसर पर 100 यूनिट रक्त का संग्रहण भी किया गया। इस अवसर पर आसपास के गांवों के 1100 विद्यार्थियों को स्कूल बैग एवं पाठ्य सामग्री भी वितरित की गई। उल्लेखनीय है कि स्व. भैरोंसिंह भी दुबई में व्यवसायरत थे एवं अपने पैतृक क्षेत्र में सभी का सहयोग करते थे।

भीकड़ा में शिविर संपन्न

गुजरात के गोहिलवाड़ संभाग के खोडियार प्रांत स्थित भीकड़ा गांव में गोपी फार्म पर 21 से 23 फरवरी तक एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया जिसमें शामपरा, खाटड़ी, भावनगर, खड़सलिया, वल्लभीपुर, मोरचंद, खरकड़ी आदि स्थानों से 110 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन भागीरथसिंह सांढ़खाखरा ने किया एवं घनश्याम सिंह भीकड़ा व घनश्याम सिंह वावड़ी ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। 22 फरवरी को प्रातः 11 बजे सहयोगियों का स्नेहमिलन भी रखा गया।

कोलेस्ट्राल में वृद्धि से भी बढ़ जाता है दिल की बीमारियों का खतरा

नई दिल्ली। 50 वर्षों से भी अधिक समय में आयुविज्ञान के क्षेत्र में इस बात को लेकर अनुसंधान हो रहे थे कि दिल की इलाज करने के लिए ऐसा कुछ उपाय खोजा जाये जिसमें चीड़-फाड़ यानी सर्जरी की जरूरत न पड़े. आखिरकार इस मुहिम में सफलता मिली और दिल की रक्त नलिकाओं को फैलाने का एक सर्जरी रहित तथा बिना किसी तरह के खतरे वाले इलाज की खोज कर ही ली गयी ताकि वे समानान्तर रूप से कार्य कर सकें। जल्दी विश्वास नहीं होता लेकिन आज के लिए ऐसा संभव हो गया है. जब बिना सर्जरी के ही हृदय की बाई पास हो जाये और इस दौरान नियमित रूप से जीवन की सामान्य गतिविधियों को जारी रखा जायें, सामाजिक जीवन में किसी तरह का खलल न पड़े और काई भी काम प्रभावित नहीं होने पाए। दिल का मामला ऐसा है जो तमाम उम्र इंसानी परेशानी का कारण बन जाता है। जवानी की आहट सुनाई देते ही दिल के लेने-देने, टूटने-जुडने का सिलसिला तक जारी रहता है। लेकिन अधेड़ावस्था आयी नहीं कि दिल को लेकर एक नई समस्या सामने आ जाती है। जवानी में गुजारे गये अनियमित जीवन और तमाम दूसरे कारणों से रक्त दबाव बढ़ता है, कोलेस्ट्राल में वृद्धि होती है जिसकी वजह से दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। दिल की बीमारियों तथा पक्षाघात का आतंक तो रक्त दबाव को अपने आप बढ़ा देता है। जैसे-जैसे हमारे आस पास प्रदूषण तथा तनाव बढ़ा है वैसे-वैसे दिल की बीमारियों में भी इजाफा होता चला गया है।

सिबिया मेडिकल सेंटर के निदेशक डा. एस.एस. सिबिया का कहना है कि सभी दिल के मरीजों के इलाज के लिए सर्जरी की जरूरत नहीं होती है. उनके लिए भी नहीं जिन्हे दिल का दौरा पड़ चुका हो. वास्तव में बाई पास सर्जरी उस स्थिति में कामयाब नहीं हो सकती अगर पर्याप्त मात्रा में समानान्तर प्रवाह नहीं है। लेकिन अब डॉक्टरों के पास एक्सटरनल काउन्टर पलसेशन ईसीपी के रूप में इलाज की एक ऐसी विधि आ गई है जो बिना सर्जरी के धमनियों में आ गयी रूकावट को खत्म करते हुए रक्त के संचार को चालू कर सकती है। यह ईसीपी इलाज समानान्तर संचार को पुनस्थापित कर सकता है। मजे के साथ अचरज की बात यह है कि मरीज काम पर जाने से पहले, भोजनावकाश के दौरान, ऑफिस खत्म होने के बाद या फिर रात के वक्त भी अपना इलाज करवा सकता है। ईसीपी इलाज के तहत मरीज के व्यानों, जांघों तथा नितंबों पर बड़े आकार के कफों का जोड़ा है जिनमें मशीन की क्षमता बढ़ाने के लिए आठ प्रेशर प्वाइंट होते हैं। डा. एस.एस. सिबिया के अनुसार आज के लिए ईसीपी हृदय रोग से पीडित उन करोड़ों हिन्दुस्तानियों के सामने एकमात्र विकल्प है जो कि या तो आर्थिक कारणों से या सर्जरी से जुड़े हुए खतरे की वजह से या फिर मधुमेह, अस्थमा, गुर्दे की बीमारी या पक्षाघात से पीडित होने के कारण बाई पास सर्जरी नहीं करवा पा रहे हैं। निश्चित रूप से ईसीपी दिल की बीमारियों को किसी विवशता की वजह से ढो रहे मरीजों के लिए एक वरदान बन कर ही आया है. दरअसल ईसीपी के जरिए हृदय के अंदर छुपी हुई उन निष्क्रिय धमनियों को भी साफ किया जा सकेगा, जिसकी वजह से अब तक मरीजों की मौत होती रही है। चिकित्सा पद्धति कम खर्च पर मरीजों का सफलतापूर्वक उपचार कर रही है और भारत जैसे देश में इस का सफलता पूर्वक कार्य करना निश्चित रूप से एक अच्छे भविष्य का संकेत दे सकता है।

- उमेश कुमार सिंह

राजपूतों के प्रतिनिधित्व की मांग हेतु क्षत्रिय समाज की बैठक

महारणा प्रताप भामाशाह सेना के अध्यक्ष डॉ. विनय बिहारी उर्फ बिहारी भैया के नेतृत्व मे उनके ऑफिस - सोहो हाउस, इंदिरापुरम एनसीआर दिल्ली में एक बैठक आयोजित की गई जिसमे भारत सरकार द्वारा गठित श्री रामजन्मभूमि ट्रस्ट मे श्री के.परासरण की अध्यक्षता मे नियुक्त 15 सदस्य की टीम में क्षत्रिय वंश के एक भी व्यक्ति को सदस्य न बनाए जाने पर चर्चा हुई। बैठक में गणमान्य लोगों ने सरकार द्वारा श्री राम जन्मभूमि ट्रस्ट में क्षत्रिय वंशजो को कोई प्रतिनिधित्व न दिये जाने पर नाराजगी जताई एवं सरकार की नीति को भेदभावपूर्ण बताते हुए इसकी घोर आलोचना की गई। कुंवर अजय सिंह का कहना था कि प्रभू श्रीराम क्षत्रिय वंश के थे, अतः श्री रामजन्मभूमि ट्रस्ट में 50 प्रतिशत सदस्यता क्षत्रिय समाज की होनी चाहिये। चर्चा हुई कि भारतवर्ष में कार्यरत सभी संस्थाओं को एकजुट होकर सरकार से इसके लिए मांग करनी चाहिए। सभी क्षत्रिय संस्थाएं अपने-अपने लेटरहैड पर माननीय राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री को इस संबंध मे पत्र लिखकर ट्रस्ट में क्षत्रिय समाज को उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करने की मांग करे। इस संबंध में एक समन्वय समिति का गठन कर संयुक्त रूप से मोदी सरकार पर दबाब बनाने हेतु दिल्ली मे धरना- प्रदर्शन करने तथा न्यायालय मे याचिका दायर करने का भी निर्णय लिया गया। डॉ. विनय बिहारी, कुँवर अजय सिंह, राजा राजेंद्र सिंह मिलकर जल्द ही इस संबंध मे आगे की कारवाई की योजना के बारे क्षत्रिय समाज के सभी संगठनों को सूचित करेंगे।

वही युवा पीढ़ी के क्षत्रिय महासभा के दिल्ली प्रभारी कुँवर रघुवंश सिंह सेंगर ने कहा कि सरकार अगर हमारी बात को नही सुनती तो निश्चित रूप से सड़क से संसद तक मार्च होगा !! बैठक में राजपूत एकता मिशन के अध्यक्ष एस के सिंह, महाराण प्रताप मिशन के अध्यक्ष डॉ विनय प्रताप सिंह, शिक्षाविद डॉ आर एन सिंह, क्षत्रिय समाज के दिल्ली सलाहकार अधिवक्ता राकेश सिंह परमार, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री प्रमुख उमेश कुमार सिंह, डॉक्टर संजीव सिंह, अभय प्रताप, मनीष सिंह, रवि प्रताप शिशोदिया, सुनील सिंह, अजय तोमर समेत बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी उपस्थित दी।

(पृष्ठ एक का शेष)

जीवन...

शास्त्रों ने हमारे अस्तित्व का दो भागों में विभाजन किया है - शरीर और आत्मा। आत्मा परमात्मा का अंश है अतः आत्मा का कार्य है ईश्वर की सेवा करना, उसमें मिल जाना। इसी प्रकार यह शरीर संसार के तत्वों से बना होने के कारण इसे संसार की सेवा में लगा देना चाहिए। किन्तु यह कैसे करना है इसकी हमें जानकारी है नहीं। इसे जानने के लिए सत्संग की आवश्यकता होती है। जिन्होंने कुछ पाया है उनके संग में बैठना ही सत्संग है। ऐसे महापुरुषों के सान्निध्य में चिंतन, मनन और स्वाध्याय से ही हमें जीवन का उद्देश्य समझ आ सकता है।

पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी इस संसार से कुछ लेते हैं और बदले में संसार को कुछ देकर अपने दायित्व का निर्वहन करते हैं। परंतु मनुष्य को भगवान ने सर्वाधिक सुविधा और क्षमता दी है अतः उसका दायित्व भी सर्वाधिक है। इस दायित्व का बोध संसार में कोई नहीं करवा रहा है। किंतु पूज्य श्री तनसिंह जी ने इस दायित्वबोध के साथ श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्रारंभ किया। संघ हम सब को अपने दायित्व का, कर्त्तव्य का बोध करवा रहा है। किंतु कर्त्तव्य का पालन, दायित्व का निर्वहन कठिन होता है। बलहीन व्यक्ति इसे नहीं कर सकता है। इसीलिए संघ शक्ति के सृजन का भी कार्य कर रहा है। जितना श्रेष्ठ कार्य हम करना चाहते हैं उतनी ही अधिक कठिनाइयों का हमें सामना करना पड़ेगा, इस बात को समझने पर ही संघ की बात समझ में आ सकती है। यहां पर अनूठी साधना हो रही है। इसमें जितना तपेंगे उतना ही आपमें निखार आएगा। हमारे भीतर की अशुद्धियां इन तीन दिनों में दूर करने का हम यहां अभ्यास करेंगे। संसार को सुख और शांति हम तभी दे सकते हैं जब हम स्वयं सुखी और शांत बन जायें।

जाति...

यह बात जो आज कही जा रही है, हमारे पूर्वजों के समय से ही यह बात मानी जाती रही है। भारतवर्ष में जो नीतिज्ञ हुए हैं, उन लोगों ने नीति की जो बात कही, वह जातियों के आधार पर नहीं कही, इन्सानियत के आधार पर कही। हम सभी परिवार, जाति जैसे अनेकों समूहों में रहते हैं। समूह में सभी को सुखी रखने का एकमात्र सूत्र है- त्याग। परिवार के त्याग के लिए अपने सुख का जो त्याग कर सकता है, वही परिवार का हितैषी होता है। इस पर हम विचार करें कि हम परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए कितना त्याग करते हैं। आज व्यक्ति अधिक से अधिक अधिकार प्राप्त करना चाहता है। अधिकारों की मांग परिवार को तोड़ डालती है। समूह, जातियां, वर्ण, इंसानियत - यह तो आगे की बातें हैं। जो व्यक्ति परिवार के सुख के लिए अपने सुख का त्याग करता है, वही मनुष्य है। परिवार गांव के हित के लिए अपना हित त्याग दे और देश के हित के लिए गांव का हित भी त्याग देना चाहिए। आत्मकल्याण के लिए देश को भी छोड़ा जा सकता है, ये बहुत ऊंची बात है, जिसको अभी शायद हम न समझ पायें पर देश तक तो समझ सकते हैं। इंसानियत की सीमा देश की सीमाओं को भी पार करती है। ऐसा व्यक्ति सम्पूर्ण संसार के लिए जीता है।

हम जातियों को मिटाने की, जातियों को सुधारने की बात करें इससे पूर्व हमें पतन का कारण ढूंढना पड़ेगा। जातियों की खोज करने जाएंगे तो हर व्यक्ति की अपनी अपनी जाति है। जाति का अर्थ है पहचान। हर व्यक्ति की अपनी अलग पहचान है। इस पहचान को मिटाना बहुत कठिन है। हजारो वर्षों में जो गिरावट आई है वह कुछ ही दिनों में समाप्त नहीं हो जाएगी। श्रेष्ठ व्यक्ति किसी भी जाति का हो समाज उसका अनुसरण करेगा। इसीलिए बुद्ध ने सिद्धान्त दिया- स्वयं दीपक बनो। अभी हम जो यह समाधान ढूंढ रहे हैं ये सब बाहरी बातें हैं। मैं बड़ा हूँ यह छोटा है अथवा मैं छोटा हूँ वह बड़ा है -यह भाव ही अंतर के रोग का कारण है। इसे दूर करना होगा। उपदेश तो हम बहुत सुनते हैं परन्तु उस पर चलना बहुत मुश्किल है। हमें पाखंड को त्यागना होगा क्योंकि उसी से अंतकरण की निर्मलता आती है और निर्मल स्थान पर ही भगवान का निवास होता है। जो व्यक्ति पत्नी को दुखी रखता है और देवी की उपासना करता है वह पाखंडी है। जो अपने पिता को प्रसन्न नहीं रख सकता वह ईश्वर को कैसे प्रसन्न रखेगा। रोग को बाहर नहीं भीतर ढूंढना है। मेरे ठीक होने से परिवार और समाज ठीक होगा- यह भाव हममें आ जाय। मेरे किसी भी कार्य से मेरे परिवार, समाज और देश की तरफ कोई अंगुली ना उठे- यह जागरूकता जब तक नहीं आती तब तक किसी संगठन का कोई लाभ नहीं है। संत कहते हैं कि धन कमाने में कोई बुराई नहीं है परन्तु संग्रह करने से, सदुपयोग न करने से यह धन व्यर्थ हो न जाए, इस बात को समझकर हम व्यवहार करने लगें तो हम सुखी हो जाएं। हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की व्यवस्था ईश्वर स्वयं करता है यदि हम उसका कार्य करना शुरू कर दें। जिसने चोंच दी है वह दाने की भी व्यवस्था करता है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य मनुष्य के भीतर की बुराइयों को दूर करना है। आम की गुठली से कभी बबूल पैदा नहीं होता न ही बबूल के बीज से आम पैदा होगा। यह भगवान का नियम है। इस नियम को समझना होगा। अच्छा कर्म करेंगे तभी अच्छा फल मिलेगा। संसार में आज सभी लोग दुःखी क्यों है। जिसके पास धन नहीं है वह भी दुखी है और जो धन कमा लेता है वह उसके नष्ट हो जाने के भय से दुखी है। तो सुख कहाँ है? वह हमारे ही भीतर है, उसी को हमें खोजना है। जो स्वयं प्रसन्न नहीं रह सकता वह अन्यों को प्रसन्न नहीं रख सकता। लाभ लोभ को जन्म देता है। एक सुविधा दूसरी सुविधा की मांग करती है। भीतरी प्रकाश के बिना सुख नहीं मिल सकता है। संसार में विविधता है और रहेगी। इस विभिन्नता में जो एकता है वह है तात्विक एकता। हमारे शास्त्र कहते हैं कि कण-कण में भगवान है। तो फिर छोटा और बड़ा क्या? हम सब भाई हैं, एक ही ईश्वर की संतान हैं। तात्विक एकता के इस विचार को भूलना ही इन सब झगड़ो का कारण है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर हमारे ये छह शत्रु हमारे शास्त्रों ने बताये हैं जो हमारे भीतर बैठे हैं। इनको समाप्त करना आवश्यक है। ईश्वर ने हमारे लिए जो परिस्थितियां चुनी हैं वह हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ है। गीता कहती है हम ही हमारे शत्रु हैं हम ही हमारे मित्र हैं। इस बात को समझें। मनुष्य के भीतर श्रेष्ठता उसके आन्तरिक गुणों से आती है। इन्हीं गुणों के कारण ब्राह्मण श्रेष्ठ थे, इन्हीं गुणों के कारण क्षत्रिय श्रेष्ठ थे। इन गुणों को खोकर अब केवल बाहरी खोखे रह गए हैं। इन खोखों में पुनः उन गुणों की प्रतिष्ठा करने का कार्य संघ कर रहा है। संघ का कार्य करते हुए मेरी यह अनुभूति रही है कि संघ का कार्य कोई पंचवर्षीय योजना नहीं, न ही किसी एक व्यक्ति के जीवनकाल में पूरा होने वाला कार्य है अपितु यह शताब्दियों तक चलने वाला कार्य है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का जो संगठन का तरीका है वह एक से अनेक और अनेक से एक होने का है। एक व्यक्ति का विचार अनेक लोगों तक पहुंचे और उन अनेक लोगों में यह विचार आ जाएं कि हम सब एक हैं - यह हमारा सूत्र है। इस सूत्र से ही जो बिखराव दिखाई दे रहा है उसका अंत हो सकता है। हम साथ में बैठकर जो संवाद कर रहे हैं यह एक भौतिक प्रयास है परंतु मैं सूक्ष्म प्रयास की बात कर रहा हूँ। यह प्रयास व्यक्ति को स्वकेन्द्रित से समाज केन्द्रित बनाने का है। सेवा को महत्ता प्रदान करने का है। जो सेवा करता है वह सेवा लेने वाले से अधिक श्रेष्ठ है। शरीर के अंगों की भांति समाज के भी सभी अंगों का समान महत्त्व है इस बात को समझने की आज सभी को आवश्यकता है।

जोरावतसिंह भादला को मातृशोक

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं महिला विभाग के प्रभारी जोरावरसिंह भादला की माताजी **माजीसा मांगलियाणी** का देहावसान 21 फरवरी को 92 वर्ष की उम्र में हो गया है। पथप्रेरक उनके देहावसान पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए परमेश्वर से उनकी आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने हेतु प्रार्थना करता है।

माजीसा मांगलियाणी

प्रतापसिंह सारोठिया का देहावसान

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **प्रतापसिंह सारोठिया** का 20 फरवरी को देहावसान हो गया है। जोबनेर में अपने अध्ययन काल में वे संघ के सम्पर्क में आए और उसी दौरान संघ के शिविर किए। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

प्रतापसिंह सारोठिया

नरपतसिंह खंवर का देहावसान

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं ख्यातिनाम कृषि अर्थशास्त्री **नरपतसिंह खंवर** का 18 फरवरी को देहावसान हो गया। उन्होंने कृषि अर्थशास्त्री के रूप में दक्षिण एशिया एवं अफ्रीका के विभिन्न देशों में अपनी सेवाएं दी। उन्होंने पर्वतीय कृषि के क्षेत्र में भारत के विभिन्न संस्थानों के साथ-साथ विश्व बैंक के साथ भी उल्लेखनीय कार्य किया। वर्ष 2001 में उन्हें फेलो ऑफ वर्ल्ड एकेडमी फॉर आर्ट एण्ड साइंस के रूप में सम्मानित किया गया। वे 2004 से 2006 तक इंडियन सोसायटी ऑफ इकोलोजिकल इकोनोमिक्स के अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने अपने जीवन काल में 9 उच्च प्रशिक्षण शिविरों सहित 32 शिविर किए। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है एवं परिजनों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नरपतसिंह खंवर

मल्लीनाथ छात्रावास का वार्षिकोत्सव संपन्न

बाड़मेर स्थित मल्लीनाथ छात्रावास में कक्षा 12 के विद्यार्थियों का विदाई समारोह एवं वार्षिकोत्सव 23 फरवरी को संपन्न हुआ। समारोह को संबोधित करते हुए विधायक मेवाराम जैन ने कहा कि छात्र जीवन में अनुशासन की महत्ती आवश्यकता है और यह छात्रावास अनुशासन, संस्कारों एवं शिक्षा का प्रमुख स्थान है। उन्होंने छात्रावास के लिए विधायक कोष से 10 लाख रुपए देने की घोषणा की।

विशिष्ट अतिथि भूपेन्द्र प्रताप सिंह द्वितीय कमान अधिकारी 13वीं वाहिनी ने कहा कि अच्छा नागरिक बनने में शिक्षा की महत्ती भूमिका है। समारोह के अध्यक्ष कमांडेंट प्रदीप कुमार शर्मा ने युवाओं से राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनने का आह्वान किया। छात्रावास के व्यवस्थापक कमलसिंह जी चूली ने लक्ष्य तय कर कड़ी मेहनत की आवश्यकता जताई। संस्थान के अध्यक्ष रावत त्रिभुवनसिंह ने सबका आभार जताया। सह व्यवस्थापक महिपालसिंह चूली ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

चांपावत राठौड़ वीरों का शौर्य गाथा सम्मेलन

जोधपुर के महामंदिर स्थित पीलवा गार्डन में चांपावत सेवा समिति के तत्वावधान में 23 फरवरी को चांपावत वीरों का शौर्य गाथा सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें चांपावतों के आदि पुरुष राव चांपाजी राठौड़, वीरवर बल्लूजी चांपावत एवं आउवा ठाकुर कुशालसिंह चांपावत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर व्याख्यान माला का आयोजन किया गया।

व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता राजस्थान धरोहर संरक्षण प्रोन्नति प्राधिकरण के पूर्व अध्यक्ष औंकारसिंह लखावत ने कहा कि राव बल्लूजी की शौर्य गाथा को प्रकाशित किया जाए तो दिल्ली की दूरी भी उस पुस्तक के पन्नों से कम होगी। उन्होंने कहा कि वोट की राजनीति के प्रभाव में राजपूतों की शौर्य गाथा को एक तरफ कर दिया गया एवं सामंत कहकर राजपूतों को किनारे किया गया क्यों कि वर्तमान शासकों को बिना रीढ़ के लोगों की आवश्यकता है। आउवा, आसोप, गूलर, बगड़ी, आलनियावास, लांबिया, सिरयारी के जागीरदारों का अंग्रेजों से संघर्ष भी कम करके आंका गया। मुख्य अतिथि वाणिज्य कर विभाग के अतिरिक्त आयुक्त शक्तिसिंह राठौड़ ने इतिहास पुरुषों की गाथाओं के डिजिटलाइजेशन की आवश्यकता जताई। पूर्व कुलपति प्रो. एल.एस. राठौड़ ने चांपावत वीरों के इतिहास का वर्णन करते हुए कहा कि ऐसे उदाहरण कम ही देखने को मिलते हैं। समारोह में प्रशासनिक अधिकारी महेन्द्रसिंह चांपावत, सिद्धार्थ सिंह रोहट, समरजीतसिंह दासपां, मानसिंह कानोता, हनुमानसिंह खांगटा, डॉ. नारायणसिंह माणकलाव सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। समारोह में अतिथियों का अभिनंदन एवं प्रतिभाओं का सम्मान किया गया।

प्रताप युवा शक्ति का रक्तदान शिविर

भीलवाड़ा में प्रताप युवा शक्ति द्वारा अपने पूर्व जिलाध्यक्ष पुष्पेन्द्रसिंह खैराबाद की स्मृति में महाराणा कुंभा ट्रस्ट परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। युवा शक्ति के प्रदेश उपाध्यक्ष कानसिंह खारड़ा के अनुसार इस शिविर में कुल 1051 युनिट रक्त का संग्रहण किया गया। भीलवाड़ा के तीन एवं जयपुर व उदयपुर का एक-एक ब्लड बैंक रक्त संग्रहण हेतु पहुंचे। इसमें 40 महिलाओं ने भी रक्तदान किया। 10 दंपति भी रक्तदाताओं में शामिल हुए। खडेश्वरी महाराज, बलरामनदास महाराज आदि संतों के सानिध्य में आयोजित इस रक्तदान शिविर में सांसद सुभाष बहेड़िया, जिला प्रमुख

शक्तिसिंह हाड़ा, पूर्व सांसद हेमेन्द्रसिंह बनेड़ा, नगर परिषद सभापति मंजू चेचाणी, भाजपा जिलाध्यक्ष लादूराम तेली सहित अनेक गणमान्य लोग भी रक्तदाताओं के उत्साहवर्धन हेतु पहुंचे। सभी रक्तदाताओं को महाराणा प्रताप का चित्र भेंट किया गया।

ठाकुर लखसिंह पूनमनगर की पुण्यतिथि मनाई

संघ के दिवंगत स्वयंसेवक एवं समाजसेवी ठाकुर लखसिंह पूनमनगर की तृतीय पुण्यतिथि 12 फरवरी को श्री राजपूत सेवा समिति जैसलमेर द्वारा श्री जवाहर राजपूत छात्रावास प्रांगण में मनाई गई। इस अवसर पर उनके परिवार द्वारा उनकी स्मृति में छात्रावास में निर्मित कक्षों का अनावरण किया गया। इसी अवसर पर पुलिस के राजपूत स्टॉफ द्वारा निर्मित एवं पूर्व विधायक छोटूसिंह द्वारा अपने कार्यकाल में विधायक मद से निर्मित कक्षों का भी उद्घाटन किया गया। वीरमदेव सिंह पूनमनगर द्वारा स्व. लखसिंह का जीवन परिचय प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि युवराज चैतन्य राजसिंह, अध्यक्ष पूर्व विधायक छोटूसिंह, विशिष्ट अतिथि विक्रमसिंह नाचना सहित सभी वक्ताओं ने स्व. लखसिंह के

व्यक्तित्व एवं कृतित्व को नमन करते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। उनके सामाजिक भाव के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई। छात्रावास की व्यवस्था को लेकर भी चर्चा की गई।

शताब्दी वर्ष के तहत स्नेहमिलन

संघ के द्वितीय संघ प्रमुख माननीय आयुवान सिंह हुडील की जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के तहत 21 फरवरी को गुजरात के अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत के चेखला गांव में स्नेहमिलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ महाशिवरात्रि के पर्व पर शिवमंदिर में यज्ञ के साथ किया गया। संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी ने पूज्य माट्साब के जीवन की जानकारी देते हुए उनके जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में आयोजित हो रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। देवेन्द्रसिंह काणेटी ने आयुवानसिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। वहीं कीरतसिंह काणेटी ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया। अनिरुद्ध सिंह काणेटी ने संघशक्ति विशेषांक में पूज्य आयुवानसिंह पर छपे लेख का वाचन किया। ग्रामवासियों ने उनके गांव में निरन्तर सांघिक कार्यक्रम आयोजित करने का आग्रह किया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org